



Hargharpanditji

सोलह सोमवार व्रत कथा

ॐ नमः शिवाय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ सोलह सोमवार व्रत कथा ॥

एक समय की बात है। भगवान शिव और माता पार्वती पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे थे। वे अमरावती नामक नगर पहुँचे। वहाँ एक सुंदर शिव मंदिर था।

माता पार्वती ने भगवान शिव से कहा कि हम यहाँ चौसर खेलें। खेल आरम्भ हुआ। उसी समय मंदिर का पुजारी वहाँ आया। माता पार्वती ने पुजारी से पूछा – बताओ, इस खेल में कौन जीतेगा?

पुजारी ने बिना सोचे कहा – भगवान शिव जीतेंगे। परन्तु खेल में माता पार्वती जीत गई। पुजारी का उत्तर गलत निकला।

माता पार्वती क्रोधित हुई और बोलीं – तुमने असत्य कहा है, इसलिए तुम कुष्ठ रोग से पीड़ित हो जाओ। यह कहकर उन्होंने शाप दे दिया।

कुछ समय बाद पुजारी को कुष्ठ रोग हो गया। वह बहुत दुःखी रहने लगा।

एक दिन कुछ देवकन्याएँ मंदिर में पूजा करने आईं। उन्होंने पुजारी को दुःखी देखा और कारण पूछा। पुजारी ने सब कथा सुनाई।

देवकन्याओं ने कहा – यदि तुम श्रद्धा से **सोलह सोमवार व्रत** करोगे, तो भगवान शिव प्रसन्न होकर तुम्हारा दुःख दूर करेंगे।

उन्होंने व्रत की विधि बताई:

हर सोमवार उपवास करो।

शिव जी का पूजन करो।

कथा सुनो।

प्रसाद बाँटो।

सोलह सोमवार तक नियम रखो।

पुजारी ने श्रद्धा से व्रत आरम्भ किया। प्रत्येक सोमवार शिवलिंग पर जल चढ़ाता, बिल्वपत्र अर्पित करता और ॐ नमः शिवाय जप करता।

सोलहवें सोमवार तक उसका रोग दूर हो गया और शरीर स्वस्थ हो गया।

भगवान शिव प्रसन्न हुए और उसे सुख-समृद्धि प्रदान की।

कुछ समय बाद माता पार्वती वहाँ आईं और पुजारी को स्वस्थ देखकर आश्चर्य किया। पुजारी ने सोलह सोमवार व्रत का महत्व बताया।

माता पार्वती ने भी इस व्रत को स्वीकार किया और इसे

लोककल्याणकारी बताया।

तब से जो भी श्रद्धा से 16 सोमवार व्रत करता है, उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

॥ व्रत विधि संक्षेप ॥

सुबह स्नान करें।
स्वच्छ वस्त्र पहनें।
व्रत संकल्प लें।
शिवलिंग पर जल, दूध, बिल्वपत्र चढ़ाएँ।
ॐ नमः शिवाय जप करें।
सोमवार व्रत कथा पढ़ें / सुनें।
एक समय सात्विक भोजन या फलाहार करें।

॥ उद्यापन ॥

16वें सोमवार प्रसाद बाँटें।
गरीबों को दान दें।
ब्राह्मण / जरूरतमंद को भोजन कराएँ।
शिव आरती करें।

॥ फल ॥

विवाह योग।
रोग शांति।
संतान सुख।
धन लाभ।
मनोकामना पूर्ण।
घर में सुख।
शिव कृपा।

॥ इति श्री सोलह सोमवार व्रत कथा सम्पूर्णम् ॥